Vol 6 Issue 8 Sept 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

ISRJ Indian Streams Research Journal

'नवजागरण और नारी'

प्रा डॉ शे. रज़िया शहनाज़ शे. अब्दुल्ला
(हिन्दी विभाग) , हु. बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, बसमतनगर , ता. बसमतनगर जि. हिंगोली (महा.)

प्रास्ताविक :–

हमारे भारत वर्ष में भले ही पुत्री के जन्म पर लोग उतना हर्ष नहीं मनाते होंगे जितना पुत्र के जन्म पर मनाते है। तब भी राष्ट्र की दृष्टि से लड़की का महत्व लड़के से कुछ कम नहीं। राष्ट्र और जाति का मंगल एवं अभ्युद्य वस्तुतः उसकी पुत्रियों पर निर्भर हैं। मनुष्य किसी भी स्थिती में हो, उसका अपने कर्तव्य को भलीभांति पहचानना और उसे अपनी पूर्ण सामर्थ्य तथा शक्ति के साथ पुरा करना ही सच्ची सेवा, जाति की सेवा हैं। जो माता अपनी संतान को सच्चरित और निरोगी बनाती है, जो अध्यापिका अपनी शिष्यों को सुयोग्य बनाती हैं, जो नर्स अपने रोगियों की भलिभांति सेवा करती है, वह वास्तव में जाति की उतनी ही सेवा करती है, जितना कि एक सेनापति युद्ध में लड़कर करता है। इसलिए स्त्री–जाति के लिए उसके उद्धार के लिए जितना भी जोर दिया जाए, वह बहुत कम ही हैं। उनके लिए शिक्षा का प्रसार और प्रचार भी उतना ही महत्वपूर्ण हैं जितना पुरूषों के लिए है। क्योंकि आत्माज्ञान को प्राप्त कर के ही मनुष्य अपनी अच्छी प्रवृत्तीयों का विकास और बुरी वृत्तियों का दमन कर सकता है। वैसे तो प्राचीन काल में इस देश में स्त्री–शिक्षा का खुब प्रचार था। गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा आदि बुद्धवादिनी और मंत्र दर्निनी देवीयाँ भारत–जननी के मुख को उज्वल कर गई, परन्तु यह बात भी अस्वीकार नहीं की जा सकती कि, पौराणिक काल में यहाँ घोर अविद्यांधकार फैल रहा था। उस समय स्त्री को शुद्र ठहराकर उसे विद्याध्ययन से वंचित रखा जा रहा था। उस समय भारत के लिए घोर पतन का युग था, परन्तु जगदीश्वर जी को धन्यवाद हैं कि उस समय का भारत उस अंधकारमय युग से बाहर निकल रहा था। स्त्री–जाति को विद्या प्राप्ति का अधिकार पुनः मिल रहा था। स्त्रियां भी एक प्यासे की तरह खूब कटिबध्द् रूप से विद्यामृतपान कर रहीं थी। इसलिए इन शिक्षित और नए विचारों को लेकर चलनेवाली स्त्रियों ने भी नवजागर में प्रवेश करना आरंभ किया।

जिस प्रकार कहा जाता हैं कि, एक बालक का जन्म और उसका पालन–पोषण माता के बिना संभव नहीं है, उसी प्रकार समाज का अभ्युद्य और राष्ट्र की स्वाधीनता महिलाओं की जागृति के बिना असभंव है। यही स्पष्ट करने के लिए यहाँ

कई महिलाओं का स्वातंत्रता अन्दोलन में उल्लेख देखने को मिलता है। जब सारे संसार में महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता और अधिकरों के लिए शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर अपना झंडा बुलंद किया और जो जातियाँ बहुत पिछड़ी हुई थी उन महिलाओं ने भी उसी पुकार में अपना स्वर मिलाया, तब हमारी भारतीय महिलाएँ ही कैसे चुप बैठ सकती थीं। वैसे भारतीय समाज व्यवस्था में पुरूष हमेशा से नारी जाति को तुच्छ समझता रहा हैं और उनके स्वार्थ के लिए ही उसके प्रति उसकी जो भावनाएं बनी रही हैं, उसमें सत्य का आधार कम और कल्पना का अधिक रहा है। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने तक यह कहा है कि, 'नारी! तू आधी तो सत्य हैं और आधी स्वप्न'[1] इस आधार पर देखा जाए तो जब नारी आधी स्वप्न ही है, तब उसके लिए अधिकारों की लड़ाई करना व्यर्थ ही है! और जो आधी सत्य है, वह शायद इसलिए कि आधी तो पुरूष की अर्द्धन्गिनी हैं, क्यों कि पुरूष सब हैं। इस कठोर सत्यों से बने हुए संसार को यह भी बतलाने की आवश्यकता हैं कि, प्राचीन काल से ही नारी को शक्तिरूपा माना जाता रहा हैं। आज फिर एक बार यहीं ध्वनि सुनाई पड़ रही हैं। नारी जाति के महत्व को एक बार फिर से लोग पहचानने लगे थें। इस संदर्भ में स्टेटुटरी कमीशनने भी अपनी रिपोर्ट में लिखा है – 'भारत की उन्नति की कुंजी महिला–आन्दोलन के हाथ में हैं। और महिला–आन्दोलन का जो परिणाम होगा वह इतना महान होग कि, उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।'[2] इस आन्दोलन का स्वरूप आगे चल कर क्या होगा, इसका भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था, चाहे तो इसका स्वरूप सामूहिक ही रह जाएं, क्यों कि इस देश की स्त्रियाँ रूढ़ियों की उपासिका थी, इसी के परिणाम स्वरूप उनमें व्यक्तिगत स्वाधीनता के भी भाव जागे और वे रूढ़ियों को तोड़कर विवाह और अन्य मामलो में भी स्वाधीन हों जाए। देश में उस समय की स्थितियों को देखते हुए कल्पना अवश्य की जा सकती थी कि, स्त्रियाँ पुरूषों की दासता से भी मुक्त होना चाहती हैं और यह बात बिना व्यक्तिगत स्वाधीनता के संभव नहीं है। हालाकि ऐसा करने में इनके मार्ग में कई कठिनाइयाँ थी परन्तु उनपर विजय प्राप्त करना जरूरी था।

श्रीमती सरोजनी नायडू जी ने एक बार अपने भाषण में कहा था –'भारतीय नारी में चाहे वह किसी को जान लेने तथा राष्ट्रोन्नति एवं अंतरराष्ट्रीय भ्रातृत्व को सजीव बनाने का भाव पूर्ण रूप से जाग उठा है।'[3] यही तो वह जागृति हैं जो मनुष्य को उठाकर कर्मक्षेत्र में लाकर खड़ा कर देती है। इसलिए जब इन स्त्रियों ने अपने अधिकरों को पुनः प्राप्त करने का संकल्प कर लिया होगा तभी तो वह स्वतंत्रता आन्दोलन में कुद पड़ी होगी। तभी तो संसार के महिला आन्दोलन पर बोलते हुए चहेनेन स्वेकर ने एक बार अपने विचारपूर्ण दृढ़ शब्दों में कहा था कि, 'वह समय आ सकता हैं जब संसार पर स्त्रियों का अधिपत्य हों जाएंगा। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के संघर्ष में नारी पुरूषों के समकक्षरूप में भाग लेती रही। पुरूषों के हृदय में विद्रोह की भावना की आग जलाने पर उसे प्रज्वलित रखने के लिए महिला–आन्दोलन तीव्र गति से चलने में तथा

स्वाधीनता आन्दोलन को सफलता प्राप्त होने में तनिक भी संदेह नही था।'

भारत देश के नवजागरण आन्दोलन में पुरूष और महिलाएँ दोनों के ही समान लगन और उत्साह के एक ही लक्ष्य को दृष्टि में रखकर कूद पड़ने से अभीष्ट सिध्दि की प्राप्ति हो सकती थी। जिसके लिए भारतीय महिलाओं को नवयुग का संदेश घर–घर जाकर सुनाना पड़ा। मातृभूमि की स्वाधीनता के आन्दोलन में उन्हें भी पुरूषों की भाँति राष्ट्रीय क्षेत्र में उतरना पड़ा। केवल सभा व व्याख्यान देने अथवा प्रस्ताव को पास करना ही उद्देश्य की पूर्ति नहीं थी। क्योंकि उस समय हमारे देश की जनता अधिकांश निरक्षर थी। शिक्षित महिलाओं की संख्या उस समय उंगलियों पर गिनने लायक थी। अतः नारी आन्दोलन को व्यापक रूप देने के लिए गाँवो में भी अपना कार्यक्षेत्र बनाना अवश्यक हों गया था। शहरों में रहनेवाली उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाए ग्रामीण बहनों की कुछ सेवा कर रही थी, क्योंकि स्वाधीनता का आन्दोलन निश्चितरूप से सफल हो यही उनकी दृष्टि थी और इसी दृष्टि को लेकर यह महिलाए आगे बढ़ रही थी।

बिहार का पर्दा–विरोधी आन्दोलन का किस प्रकार सुत्रपात हुआ, इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी जी ने अपने लेख में जो लिखा था, उसका सारांश रूप प्रस्तुत है जिसे जनवरी 1928 के 'यंग इंडिया' में प्रकाशित किया गया था। उसे यहाँ उद्धतृ किया गया है, गांधी जी ने लिखा था– खादी कार्यकर्ता श्री रामनंदन मिश्र अपनी पत्नी को पर्दे के अत्याचार से बचाना चाहते थे। चूंकि उनके घरवाले उस लड़की को घर से आश्रम में नहीं जाने देना चाहते थें। इसलिए वह आश्रम से दो लड़कियों को अपनी पत्नी की सहचरी बनाने के लिए ले गए। उनमें एक मगनलाल गांधी की पुत्री राधा उस लड़की की शिक्षिका होनेवाली थी। उसके पास स्व. दलबहादुरगिरि की पुत्री दूर्गादेवी भी गई थी। नवयुवती पत्नी के माता–पिता ने आश्रम की लड़कीयोंकी श्रीमती मिश्र को पर्दे से बाहर लाने की चेष्टा का विरोध किया। लड़की ने सभी कठिनाईयों का सामना किया। इसी बीच मगनलाल गांधी अपनी पुत्री से मिलने तथा उसके प्रयत्नों में सहाय्यता पहुंचाने के उद्देश्य से बिहार गए। जहाँ उस गाँव में उनकी पुत्री राधा बहन अपना काम कर रहीं थी। वही उस गाँव में वह बीमार पड़े और स्वर्गवासी हों गए। यहीं कारण था कि बिहार के मित्रों ने पर्दे के विरूद्ध संग्राम करना अपने लिए गौरव का विषय समझा। राधा बहन आश्रम में श्री राजकिशोरी देवी को ले आई। उनके वहाँ जाने से और भी हलचल मच गई। इससे श्री रामनंदन मिश्र को प्रोत्साहन मिला, क्यों कि वह तो अपने को इस संग्राम में संलग्न करने के लिए पहले ही तयार थें। इस प्रकार यह आन्दोलन बिहार में प्रारंभ हों गया। इस आन्दोलन के प्रधान रहे – बिहार के अनेक संग्रामों के बहादुर सैनिक बा. ब्रजकिशोर प्रसाद। इस आन्दोलन के अलावा ऐसा कोई आन्दोलन नहीं दिखाई देता जो मिश्र जी ने किया हों। इसलिए ही मगनलाल गांधी के देहवासन से बिहार में नारी–जागरण आन्दोलन का श्री गणेश हुआ। 1928 की जुलाई को सारे प्रान्त में 'पर्दा–विरोधी' दिवस मानाए जाने का निश्चय हुआ। इसी पर्दे आन्दोलन के विरूद्ध में 'तुमुल' आन्दोलन शुरू हुआ। इसके ठीक दो वर्ष बाद 1930 में गांधी जी के नेतृत्व में 'सत्याग्रह' आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ। नारी जागरण की लहर में राष्ट्रीय भावनाओं का उद्दीपन तो हों ही चुका था। देखते–ही–देखते प्रान्त की अनेक प्रमुख महिलाओं ने आन्दोलन में भाग लेकर तथा कारागार वरण करके यह दिखला दिया कि, महिलाए राष्ट्र के लिए कष्ट और त्याग स्वीकार करने में पुरूषों से किसी प्रकार कम नहीं हैं।

इ.स. 1931 में नारी जागरण आन्दोलन को और भी अधिक बल मिला जब कि राष्ट्रपति श्री. राजेन्द्र प्रसाद जी बिहार के राष्ट्रीय जीवन के कुशल कर्णधार श्री ब्रजकिशोर प्रसाद तथा बिहार सरकार के मिनिस्टर सर गणेश दत्त सिंह का ध्यान पर्दे की कुप्रथा और महिला आन्दोलन की आवश्यकता की ओर आकृष्ट हुआ। इसीके परिणाम स्वरूप 1931 की जुलाई में पर्दा विरोधी–नारी सम्मान जो 'Anti & Pardah Women's Conference' का प्रथमाधिवेशन पटना में श्रीमती बहुरिया जी की अध्यक्षता में हुआ। बहुरिया जी 1930 में सत्याग्रह में जेल जा चुकी थी। उस आन्दोलन में अनेको पर्दानशी महिलाएं भी शामिल हुई थी और सम्मेलन में पर्दा प्रथा के विरूद्ध जोर–शोर के साथ हिस्सा लिया। जिससे प्रांत के कोने–कोने में नारी–जागृति की लहर फैलने लगी और पर्दा–प्रथा के खिलाफ लागों के विचार दृढ़ होने लगे। इसका परिणाम यह हुआ की 1932 में सत्याग्रह आन्दोलन के पुनः जारी होने पर बिहार की एक सौं से अधिक राष्ट्र–सेविकाओं ने कारावास के साथ–साथ पुलिस की लाठियों के प्रहार भी सहन किए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, नवजागरण काल में भी स्त्री–पुरूषों से पिछे नहीं थी। इस संदर्भ में महात्मा गांधी जी ने कहा हैं –'स्त्री, पुरूष की सहचरी हैं और उसमें पुरूष के समान ही योग्यता हैं। पुरूष के सूक्ष्मतिसूक्ष्म कार्य में भी उसे हिस्सा बंटाने का अधिकार हैं और पुरूष के समान ही उसे भी स्वाधीनता और स्वच्छंदता प्राप्त है। पुरूष को अपने कर्म–क्षेत्र में जिस प्रकार महत्वपूर्ण स्थान मिला है उसी उरह उसके क्षेत्र में उसे भी मिलें। वह स्थिति केवल पढ़ने–लिखने के परिणाम स्वरूप नहीं हैं, बल्कि यह तो स्वभाविक स्थिति हैं।'[4]

19 वी शताब्दी के अंत तक आते–आते संसार के सभी देशों में स्त्रियों को लोग निम्न कोटी का समझ रहें थें। पुरूषों के बनाए हुए अत्याचारपूर्ण विधानों से नारियों को उठने का अवसर ही नहीं मिल रहा था। इस प्रकार घोर अज्ञान में पलनेवाली बालिकाओं को भला अपनी शक्तियों एवं अधिकारों का ज्ञान कहाँ से होता? ऐसी स्थिति में नारी जागरण अत्यंत अवश्यक था। और आज संसार की स्थिति बदल गई हैं, सर्वत्र महिलाओं में जागृति आ गई है परन्तु इस जागृति का संदेश सर्व प्रथम 'प्राय्य' महिलाओं ने दिया। हजारों फारसी रमणियों ने मानवता की समस्यां सुलझाने के लिए स्वाधीनता और समता, समानता की वेदी पर अपने को बलिदान कर दिया और पूर्व की स्त्रियाँ तब तक स्वाधीन हों गई जब पश्चिम की महिलाओं ने स्वाधीनता का स्वप्न भी नहीं देखा था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, भारतीय नवजागरण में तथा स्वाधीनता आन्दोलन में स्त्री का अपना अलग योगदान रहा हैं। जहाँ स्त्रियों ने पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर, कदम–से कदम मिलाकर नवजागरण में सक्रिय रूप से हिस्सा लेती रहीं परन्तु भारतीय साहित्य हों या इतिहास इनमें स्त्रियों के नवजागरण पर कम ही प्रकाश डाला गया। इसलिए स्त्रियों का स्वाधीनता अन्दोलन में किया गया बलिदान, त्याग, संघर्ष को संक्षिप्तरूप यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

'तुलसी हाय गरीब की कबहुं न निहलल जाय
मेरे चाम की फूंक से लोह भसम हों जाय।'

संदर्भ :

1.स्वाधीनता – संग्राम हिन्दी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र – विश्वमित्र – अक्तुबर 1935
2.स्वाधीनता – संग्राम हिन्दी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र – विश्वमित्र – अक्तुबर 1935
3.स्वाधीनता – संग्राम हिन्दी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र – विश्वमित्र – अक्तुबर 1935
4.स्वाधीनता – संग्राम हिन्दी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र – विश्वमित्र – अक्तुबर 1935

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org